GOKHALE MEMORIAL GIRLS' COLLEGE

Activity Report of conducting classes for the students of

SyamaPrasad College, Kolkata for the session 2023-24

Gokhale Memorial Girls' College, Kolkata and Syama Prasad College, Kolkata, both affiliated to the University of Calcutta have a MoU. As per this MoU both the institutions have agreed to develop collaborative activities in the academic areas of mutual interest. One of the areas of mutual interest is conducting lectures and exchange of information.

Accordingly, Dr. Reshmi Panda Mukherjee, Associate Professor, Department of Hindi, Gokhale Memorial Girls' College have taken two online theory classes of MHND-2 course (CC-2-2- Paper- Aadhunik Hindi Kavita) for the students of department of Hindi, Syama Prasad College, Kolkata, on 23-5-24 & 28-5-24 . (Meeting Link - https://meet.google.com/wyo-zixx-okg, https://meet.google.com/kca/wwrg-ddi) and Dr. Vinita Tiwari, SACT, Syama Prasad College, have taken two online theory classes of HNDM-2 course for the students of department of Hindi, Gokhale Memorial Girls' College on 24-6-24 & 28-5-24 (Meeting Link- https://meet.google.com/ndj-gjvk-ekb and https://meet.google.com/sxn-rkob-pti) through Google meet. Study material have been given to the students. These classes will continue in the session 2024-25 as the syllabus is yet to be finished. Relevant pictures are a follows-

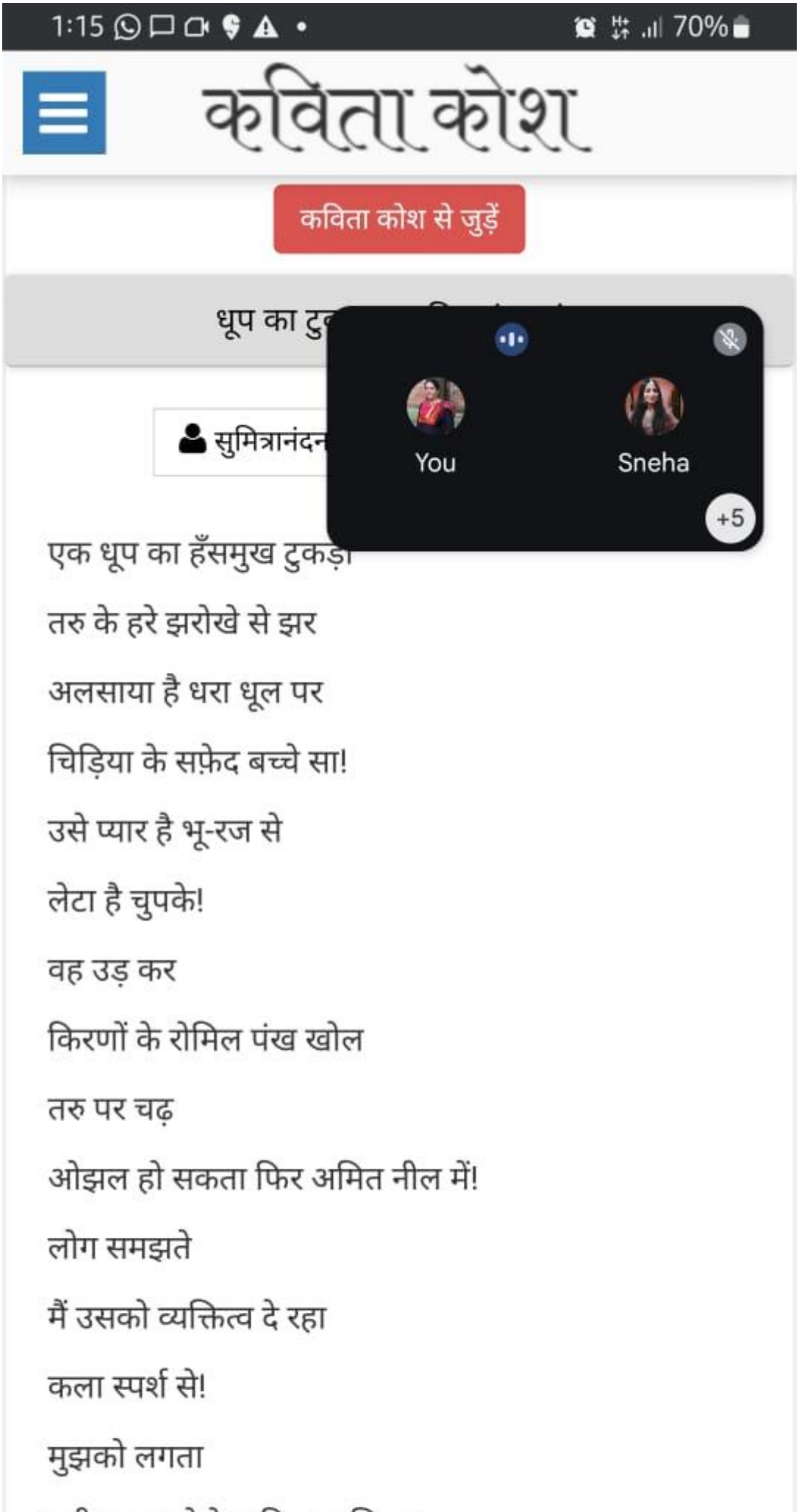
1:15
70%
कविता कोश
कविता कोश से जुड़ें
धूप का टु
सुमित्रानंदन
You
Sneha
+5
एक धूप का हँसमुख टुकड़ा
तरु के हरे झरोखे से झर
अलसाया है धरा धूल पर
चिड़िया के सफ़ेद बच्चे सा!
उसे प्यार है भू-रज से
लेटा है चुपके!
वह उड़ कर
किरणों के रोमिल पंख खोल
तरु पर चढ़
ओझल हो सकता फिर अमित नील में!
लोग समझते
मैं उसको व्यक्तित्व दे रहा
कला स्पर्श से!
मुझको लगता

1:27 68%

कविता कोश

न जाने नक्षत्रों से कौन

निमंत्रण देता मुझको मौन !

सघन मेघों का भीमाकाश

गरजता है जब तमसाका

दीर्घ भरता समीर निःश्वास

प्रखर झरती जब पावस-धार ;

You

Manjit

+5

न जाने ,तपक तड़ित में कौन

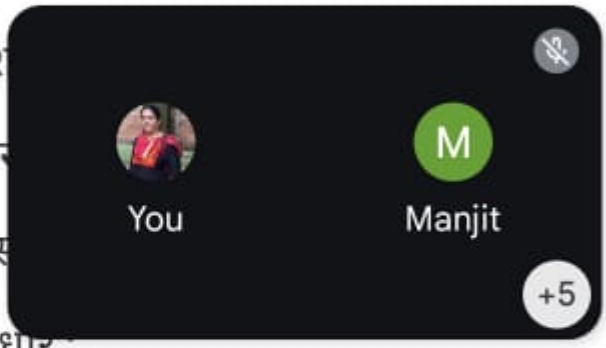

मुझे इंगित करता तब मौन !

देख वसुधा का यौवन भार

गूंज उठता है जब मधुमास,

विधुर उर के-से मृदु उद्गार

कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छवास,

न जाने, सौरभ के मिस कौन

संदेशा मुझे भेजता मौन !

क्षुब्ध जल शिखरों को जब बात

सिंधु में मथकर फेनाकार ,

बुलबुलों का व्याकुल संसार

बना,बिथुरा देती अज्ञात ,

उठा तब लहरों से कर कौन

12:34 33%
Kavita.pdf.pdf

प्रसंग

इसमें यशोधरा के स्वाभिमानी रूप वर्णन किया गया है। यशोधरा को यह दुख हुआ कि उसकी पति को जाना ही था तो उसे बता कर क्यों नहीं गए अब वह कहती है कि अगर पति मुझे कहकर जाते तो शायद अपनी राह में बाधा ही नहीं पाते।

व्याख्या

इसमें यशोधरा के स्वाभिमानी रूप वर्णन किया गया है। यशोधरा को यह दुख हुआ कि उसकी पति को जाना ही था तो उसे बता कर क्यों नहीं गए। अब वह कहती है कि अगर पति मुझे कहकर जाते तो शायद अपनी राह में बाधा ही नहीं पाते। सरकारी थी चाहिए यशोधरा यह कह रही है की मेरी पति गौतम मुझे कह क्यों नहीं गए सिद्धि के लिए पति गए यह तो गर्व की बात है परंतु क्यों चोरी चोरी गए सखी अगर वह कह कर जाते तो मुझे अपनी बाधा ना पाते। उन्होंने मुझे माना बहुत परंतु पहचाना नहीं यशोधरा बार-बार कहती है कि हम नारियां कभी पति की राह में बाधा नहीं बनती। हम लोग ही उन्हें सुसज्जित कर के रण में भेजती हैं। क्षत्रिय धर्म का पालन करते होगे हम लोग ही उन्हें युद्ध की मैदान में भेजती हैं इसलिए अगर वह मुझको कहकर जाते तो कभी रह में बाधा न पाते। मेरा भाग्य ही अब अभागा बन गया। अब किस पर यह विफल गर्व जागा। जिसे अपनाया था उन्होंने ही मुझे त्यागा अब केवल यही स्मरण रहा है जब पति छोड़कर जाते हैं तो शायद हमारी आंखे उन्हें निष्ठुर कहते हमारी आंखों से तब जो आंसू निकलती। शायद सहृदय गौतम उसे सह नहीं पाते इसीलिए शायद वह मुझ पर तरस खाकर ही चले गए। फिर यशोधरा अपने मन को समझाती है के पति गए हैं वह जाए और सिद्धि पाए हम जैसे लोगों के दुख से दुखी ना हो मैं किस मुंह से उन्हें उलाहना दूं आज तो वह मुझे अधिक भा गए अगर गए हैं तो लौट कर भी आएंगे और अपने साथ कुछ अनुपम लाएंगे यह जो प्राण आज रो रहे हैं। उन्हें एक दिन जा कर पाएंगे पर ऐसी खुशी से क्या पाएंगे इस बात पर संदेह है यशोधरा एक बात से दुखी होकर बार-बार कहती है सखी वह मुझे कहकर जाते।

विशेष

1) खड़ी बोली है।

2)वियोग का वर्णन है।

3) सिद्धार्थ से गौतम बनन के सफ़र में यशोधर का त्याग है।

किसान

हेमन्त में बहुधा घनों से पूर्ण रहता व्योम है
पावस निशाओं में तथा हँसता शरद का सोम है

हो जाये अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषकों को कहाँ
खाते, खवाई, बीज ऋण से हैं रंगे रक्खे जहाँ

आता महाजन के यहाँ वह अन्न सारा अंत में
अधपेट खाकर फिर उन्हें है काँपना हेमंत में

बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा
है चल रहा सन सन पवन, तन से पसीना बह रहा

देखो कृषक शोषित, सुखाकर हल तथापि चला रहे
किस लोभ से इस आँच में, वे निज शरीर जला रहे

12:34 33%
Kavita.pdf.pdf

किस लोभ से वे आज भी, लेते नहीं विश्राम हैं

बाहर निकलना मौत है, आधी अँधेरी रात है
है शीत कैसा पड़ रहा, औ' थरथराता गात है

तो भी कृषक ईंधन जलाकर, खेत पर हैं जागते
यह लाभ कैसा है, न जिसका मोह अब भी त्यागते

सम्प्रति कहाँ क्या हो रहा है, कुछ न उनको ज्ञान है
है वायु कैसी चल रही, इसका न कुछ भी ध्यान है

मानो भुवन से भिन्न उनका, दूसरा ही लोक है
शशि सूर्य हैं फिर भी कहीं, उनमें नहीं आलोक है

"हो जाये अच्छी भी फसल,
पर लाभ कृषकों को कहाँ,
खाते, खवाई, बीज ऋण से हैं रंगे रक्खे जहाँ।
आता महाजन के यहाँ वह अन्न सारा अंत में,
अधपेट खाकर फिर उन्हें है कांपना हेमंत में।"

प्रस्तुत पंक्तियों में यह स्पष्ट किया गया है कि कितनी भी अच्छी फसल क्यों न हो, परन्तु उस पर अधिकार है महाजन का। अन्नदाता होकर स्वयं खाता है आधा पेट ! और जीता इस उम्मीद में है कि अगली फसल कर देगी सब ठीक। इस उम्मीद में किसान फिर से कड़कती धूप में पसीना बहाते हुए हल चलाता है। अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाते हुए मेहनत करता रहता है। फिर भी उसका परिवार आधा पेट खाकर सोता है। धूप, बरसात भूलकर मेहनत करता है। यह वर्तमान समय के अधिकांश गरीब किसानों की वास्तविकता है।

"बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा,
है चल रहा सन-सन पवन, तन पसीना बह रहा।
देखो कृषक शोषित, सुखाकर हल तथापि चला रहे,
किस लोभ से इस आँच में, वे निज शरीर जला रहे।"

प्रस्तुत पंक्तियों में किसान के बारे में यह दर्शाया है कि बिना लोभ के वह अपना शरीर जलाकर, सूरज की तपती धूप में अपना पसीना बहाकर मेहनत करता है। इसी प्रकार बारिश में बिना किसी चाहत के खेतों में बिना किसी के सहारे भीगते हुए गरजते बादलों के बीच खुले असमान में रहता है। अपने खेत की फसलों की रखवाली करता है। उसे आराम की नहीं, अपने खेत की फसलों की चिंता सताती है। किसान को किसी प्रकार का लोभी नहीं, वह कर्तव्य का पालन करने वाला है।

"घनघोर वर्षा हो रही, है गगन गर्जन कर रहा,
घर से निकलने को गरज कर, वज्र कर रहा।
तो भी कृषक मैदान में करते निरंतर काम है,
किस लोभ से वे आज भी, लेते नहीं विश्राम है।

इस प्रकार बसरते असमान के बीच, गरजते बादलों के बीच, बिना विश्राम किए वह अपना कर्तव्य निभाता है और अपना जीवन जीता है। बरसात हो, सर्दी हो या गर्मी हो, कभी किसान को आराम नहीं मिलता। वह अपने फसलों की रातों को जागकर रखवाली करता है और खेतों में जगाकर रातें बिताता है।

"तो भी कृषक ईंधन जलाकर खेत पर है जागते,
यह लाभ कैसा है, न जिसका मोह अब भी त्यागते।"

आज भी किसान अपना मोह त्यागकर खेतों में जाकर फसलों की रखवाली करता है। उसको लाभ का मोह नहीं, वह अपने सपने और मोह को त्यागकर सिर्फ अपने कर्तव्य को याद रखता है।

12:34 34%
Kavita.pdf.pdf

सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?

मुझको बहुत उन्होंने माना
फिर भी क्या पूरा पहचाना?
मैंने मुख्य उसी को जाना
जो वे मन में लाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में -
क्षात्र-धर्म के नाते
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किसपर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा;
रहे स्मरण ही आते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते ?
गये तरस ही खाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

जायें, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुख से,
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से ?
आज अधिक वे भाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

गये, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे,
रोते प्राण उन्हें पावेंगे,
पर क्या गाते-गाते ?
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

संदर्भ

सखि वे मुझसे कहकर जाते कविता युग प्रवर्तक छायावादी कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित हैं। मैथिलीशरण गुप्त अकेले ऐसे कवि हैं जिन्होंने द्विवेदी युग से आधुनिक काल तक अनेक व्यक्तियों को आत्मसात करते हुए हिंदी कविता को अनेकार्थक में समृद्ध किया।

प्रसंग

इसमें यशोधरा के स्वाभिमानी रूप वर्णन किया गया है। यशोधरा को यह दुख हुआ कि उसकी पति को जाना ही था तो उसे बता कर क्यों नहीं गए अब वह कहती है कि अगर पति मुझे कहकर जाते तो

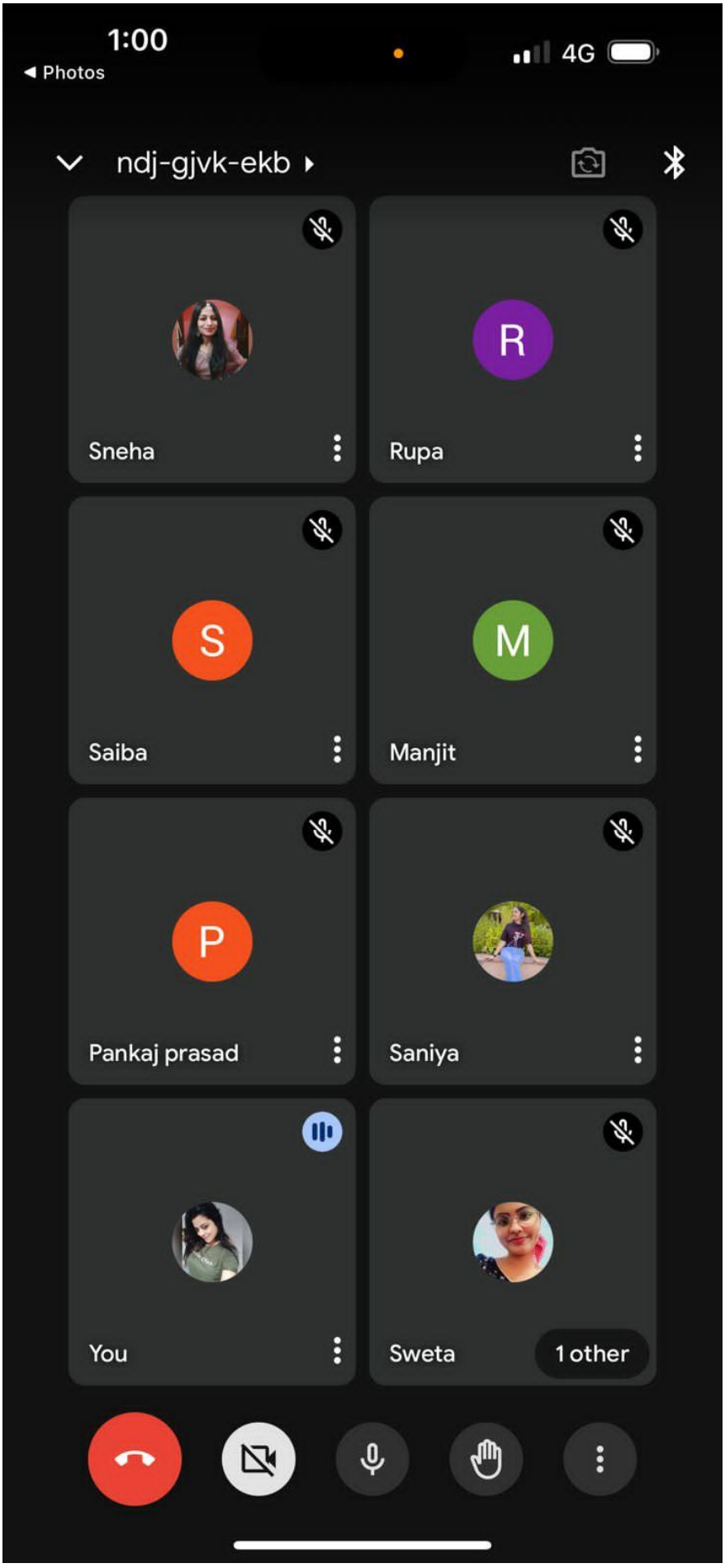
1:00
Photos
4G
ndj-gjvk-ekb
Sneha
R
Rupa
S
Saiba
M
Manjit
P
Pankaj prasad
Saniya
You
Sweta
1 other